कॉफी क्षेत्र - भारत

- भारतीय कॉफी का परिचय
- उपजाने की परिस्थितियाँ
- महत्वपूर्ण किस्में
- विभिन्न क्षेत्रों को दर्शाता भारत का मानचित्र
- उन्नतांश, वृष्टि आदि के विषयों में विशिष्टीकरण के साथ क्षेत्र लोगो
- स्पेशियालिटी कॉफी

भारतीय कॉफी का परिचय

विश्व की सर्वोत्तम छाँव में उगाई जाने वाली 'मृदु' कॉफी ।

भारतीय कॉफी, पेयों में अत्यन्त असाधारण पेय है जो मोहक प्रखरता और उद्दीपक तीव्रता प्रदान करता है। भारत वह एकमात्र देश है जो अपनी सारी कॉफी छाँव अधीन उपजाता है। विशेषतया, मृदु और अधिक अम्लीय न होते हुए इन कॉफियों में एक पूर्ण विदेशज स्वाद और अच्छी खुश्बू होती है।

भारतीय कॉफी में एक अनोखी ऐतिहासिक महक भी है। यह सब लगभग चार सौ साल पहले एक लम्बी कठिन यात्रा के साथ शुरू हुआ, जब अनुश्रुत सन्त बाबाबुदान सुदूर यमन से सात जादुई फलियों को लाए और उन्हें कर्नाटक के चन्द्रगिरि पहाडियों में रोपा। स्वाद, खुश्बू, आकार तथा अम्लीयता का संवेदन जो आप प्रत्येक कॉफी के साथ अनुभव करते हैं वे इन विचित्र शुरूआत से गहरे जुड़े हैं।

अक्सर कहा जाता है, भारतीय कॉफी उपजकर्ता फसल में अपनी जान लगा देते हैं। तब इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि भारत ने डेढ़ सौ वर्षों से भी अधिक के लिए उच्च क्वालिटी कॉफी के अद्भुत किस्मों का लगातार उत्पादन तथा निर्यात किया है।

उपजाने की परिस्थितियाँ

भारत अपनी सभी कॉफी की खेती एक अच्छी द्वि-स्तर मिश्रित छाया छत्री के नीचे करता है जिसमें सदाबहार फलीदार पेड़ भी हैं। कॉफी बागानों में लगभग 50 भिन्न किस्म के छाया पेड़ देखने को मिलते है। छाया पेड़ ढ़ालू जमीन पर भूक्षरण को रोकते हैं, वे गहरे स्तरों से पोषक तत्वों के पुनःचक्र द्वारा मिट्टी को उपजाऊ बनाते हैं और तापमान में मौसमी उतार चढ़ाव से कॉफी पौधों की रक्षा करते हैं और विभिन्न प्रकार के वनस्पति तथा प्राणिजाति को अपने आँचल में स्थान देते हैं।

भारत में कॉफी बागान मौलिक मसाला जगत भी है, मसाला तथा फल, फसलों के अनेक किस्म जैसे काली मिर्च, इलाइची, वेनिला, नारंगी तथा केला कॉफी पौधों के साथ उगते हैं।

भारत के कॉफी उपजाने वाले क्षेत्रों में मौसम परिस्थितियाँ पृथक होते हैं जो कॉफी के विभिन्न किस्मों की खेती के लिए उपयुक्त है। अधिक उन्नतांश वाले कुछ क्षेत्र अरेबिका के मृदु क्वालिटी के लिए उपयुक्त हैं जबकि गर्म आर्द्र परिस्थितियाँ रोबस्टा के लिए अति उपयुक्त हैं।

घटक	अरेबिका	रोबस्टा
मिट्टी	गहरी, उर्वर, जैव पदार्थों से भरी , अच्छी छनी हुई तथा हल्की अम्लीय (पी.एच 6.0-6.5)	अरेबिका के जैसे ही
ढ़ालू	हल्का से मध्यम ढ़ालू	हल्का ढ़ालू से सम तल खेत
उन्नतांश	1000-1500 मी.	500-1000 मी.
पहलू	उत्तर, पूर्व और पूर्वोत्तर पहलू	अरेबिका के जैसे ही
तापमान	15^0से-25^0से, ठंडा, सम	20^0 से c - 30^0 से, गर्म, आर्द्र
सम्बद्ध आर्द्रता	70-80%	80-90%
वार्षिक वर्षा	1600-2500 मि.मी.	1000-2000 मि.मी.
पुष्पण बौछार	मार्च- अप्रैल (25-40मि.मी.)	फरवरी-मार्च (25-40 मि.मी.)
समर्थक बौछार	अप्रैल -मई (50-75 मि.मी.) अच्छा वितरित	मार्च- अप्रैल (50-75 मि.मी.) अच्छा वितरित

महत्वपूर्ण किस्म

केन्ट्स :- केन्ट्स अरेबिका का प्राचीनतम किस्म है जिसे,1920 के दशक में इसी नाम के एक अंग्रेज रोपक ने चुना। यह किस्म, रोपण समुदाय में 1940 तक लोकप्रिय रहा क्योंकि, यह किट्ट के प्रति कम प्रभाव्य था। आज इसे कम क्षेत्रों में उगाया जाता है पर, यह अब भी अपनी विशिष्ट कप क्वालिटी के लिए जाना जाता है।

एस.795 - यह 1940 के दशक में उच्च उपज, बडे फली, उच्चत्तम क्वालिटी तथा पत्ती किट्ट के प्रति अपेक्षित सहनशीलता के साथ रिलीज किया गया सबसे लोकप्रिय अरेबिका सेलेक्शन है। इस सेलेक्शन को अपनी उच्च क्वालिटी के लिए ज्ञात 'केन्ट्स' अरेबिका का प्रयोग करते हुए विकसित किया गया। आज भी एस.795 रोपकों में लोकप्रिय है और सबसे अधिक खेती किये जाने वाला अरेबिका किस्म है। एस.795 में मोका के हल्के स्वाद के साथ एक सन्तुलित कप लभ्य है।

कावेरीः- काटीमोर के नाम से ज्ञात कावेरी, 'काटूरा' और 'हाइब्रिडो-डी-टीमोर' के बीच संकर की सन्तति है। काटूरा जाना माना बोर्बोन किस्म का एक प्राकृतिक उद्भेदी है। अतः कावेरी ने काटूरा के उच्च उपज तथा श्रेष्ठ क्वालिटी विशेषता तथा 'हाइब्रिडो-डी-टीमोर' के प्रतिरोधी गुणों को अपनाया।

एस.एल.एन 9- सेलेक्शन 9 इथियेपियन अरेबिका संग्रह, 'टफारिकेला' और 'हाइब्रिडो-डी-टीमोर' के बीच संकर की व्युत्पत्ति है। एस.एल.एन 9 ने 'टफारिकेला' के सभी श्रेष्ठ कप क्वालिटी विशेषता को अपनाया है। इस किस्म ने भारतीय कॉफी बोर्ड द्वारा आयोजित 'फ्लेवर ऑफ इण्डिया-कप्पिंग प्रतियोगिता-2002' में सर्वोत्तम अरेबिका के लिए फाइन कप अवार्ड जीता।

विभिन्न क्षेत्रों को दर्शाता मानचित्र

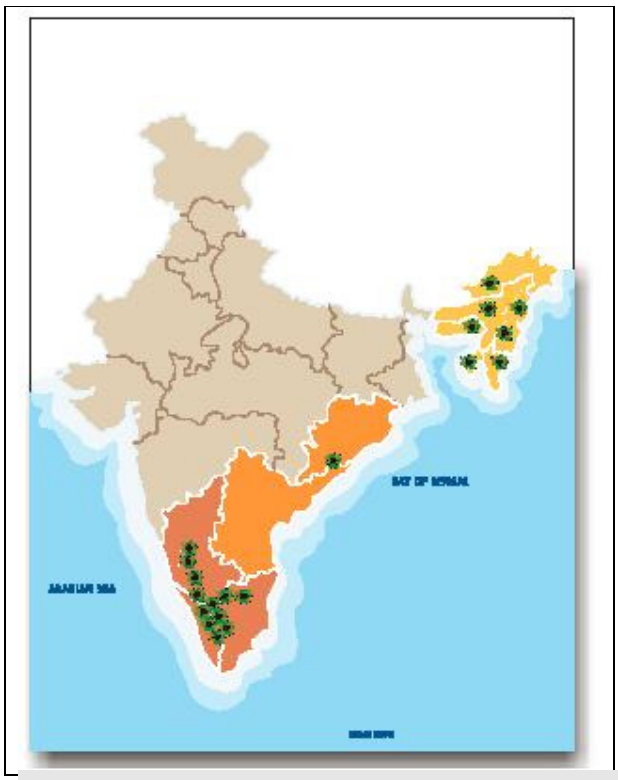

भारत में कॉफी उपजाने वाले क्षेत्रों को तीन भिन्न श्रेणियों के अन्तर्गत श्रेणीकृत किया जा सकता है :

पारम्परिक क्षेत्र 	कर्नाटक, केरल और तमिल नाडू जैसे दक्षिणी राज्यों का प्रतिनिधित्व करता पारम्परिक क्षेत्र।
गैर पारम्परिक क्षेत्र 	देश के पूर्वी घाटों में आन्ध्र प्रदेश और ओडिशा को शामिल करते हुए गैर पारम्परिक क्षेत्र।
पूर्वोत्तर क्षेत्र 	कर्नाटक, केरल और तमिल नाडू जैसे दक्षिणी राज्यों का प्रतिनिधित्व करता पारम्परिक क्षेत्र।

दक्षिण के बागान, भारतीय कॉफी का पालना स्वरूप है। इनमें कर्नाटक का बाबाबुदानगिरीस शामिल है, जिसे भारत में कॉफी का जन्मस्थली माना जाता है। पूर्वी घाट और पूर्वोत्तर राज्य कॉफी के नव विकसित क्षेत्र हैं।

उन्नतांश, वृष्टि इत्यादि के संबंध में विशिष्टीकरण के साथ क्षेत्रीय लोगो

अन्नामलै **(तमिल नाडु)** 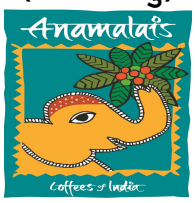		उन्नतांश:1000-1400 मी. एम.एस.एल वृष्टिः 2500-3000 मि.मी. मुख्य कॉफी किस्म:अरेबिका कॉफी अधीन कुल क्षेत्र 2,500 हे. औसत उत्पादन:1,500 मे.ट. मुख्य किस्म एस.795, कावेरी, एस.एल.एन.9 मुख्य अन्तःफसलःगोल मिर्च, नांरगी, केला
अन्नामलै (तमिल नाडु): इस क्षेत्र के अभयारण्य चितकबरे चीतों का वासस्थल है, जबकि बागान बढ़िया उच्च उपज देने वाले अरेबिका का घर है जिसमें विदेशज केन्ट्स भी शामिल है।		
अरकू वैली **(आन्ध्र प्रदेश)** 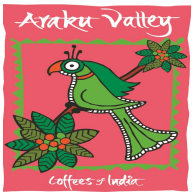		उन्नतांश:900-1100 मी. एम.एस.एल वृष्टिः 1000-1200 मि.मी. मुख्य कॉफी किस्म:अरेबिका कॉफी अधीन कुल क्षेत्र :20,000 हे. औसत उत्पादन:3,100 मे.ट. मुख्य किस्म : एस.795, एस.एल.एन.4, एस.एल.एन.5, कावेरी मुख्य अन्तः फसलः गोल मिर्च, आम, कटहल, सब्जियाँ
अरकू वैली (आन्ध्र प्रदेश)रंगीन तोतों का घर, इस रम्य घाटी में पेडों के बीच लपकते तथा चहचहाते लाल तथा हरे पक्षियों के झुण्ड को देखना कतई अस्वाभाविक नहीं है।		
बाबाबुदानगिरी **(कर्नाटक)** 		उन्नतांश:1000-1500 मी. एम.एस.एल वृष्टिः 1750-2200 मि.मी. मुख्य कॉफी किस्म:अरेबिका कॉफी अधीन कुल क्षेत्र :15,000 हे. औसत उत्पादन:10,500 मे.ट. मुख्य किस्म : एस.795, एस.एल.एन.9,कावेरी मुख्य अन्तःफसलःगोल मिर्च, इलायची, सुपारी
बाबाबुदानगिरी(कर्नाटक): बाबाबुदान यमन से सात 'जादुई' फलियाँ लाए और उन्हें इस क्षेत्र के उन्नत पहाडियों में रोपा। प्रचुर मात्रा में पूरी तरह से बढे अरेबिका के बागानों के पास यहाँ अक्सर हिरण चरते हुए देखे जाते हैं।		

बिलिगिरीस **(कर्नाटक/तमिलनाडू)** 		उन्नतांशः1500-2000 मी. एम.एस.एल वृष्टिः 1100-1200 मि.मी. मुख्य कॉफी किस्मः अरेबिका कॉफी अधीन कुल क्षेत्र :800 हे. औसत उत्पादनः 700-800 मे.ट. मुख्य किस्म : एस.795, कावेरी एस.एल.एन.9 मुख्य अन्तःफसलः नांरगी,केला गोल मिर्च,
बिलिगिरीस(कर्नाटक/तमिलनाडू):पूर्ण रूप से बढे अरेबिका के अलावा यह क्षेत्र बडे श्रृंगों वाले भारत का सबसे बड़ा हिरन साम्भर के लिए विख्यात है ।		
ब्रह्मपुत्र (कर्नाटक) 		उन्नतांशः800-1200 मी. एम.एस.एल वृष्टिः 1500-2000 मि.मी. मुख्य कॉफी किस्मः अरेबिका कॉफी अधीन कुल क्षेत्र 5000 हे. औसत उत्पादनः 300 मे.ट. मुख्य किस्म : एस.795, कावेरी मुख्य अन्तःफसलः अनन्नास,कटहल,गोल मिर्च,सब्जियाँ
ब्रह्मपुत्र :पूर्वोत्तर राज्यों में बहने वाला प्रबल ब्रह्मपुत्र इस क्षेत्र का जीवनांश है। यह एक श्रृंगवाले गैंडों का घर है। ये दबंग जानवर पूर्वी असम के काजीरंगा नेशनल पार्क में भारी संख्या में पाए जाते हैं।		
चिकमगलूर(कर्नाटक) 		उन्नतांशः700-1200 मी. एम.एस.एल वृष्टिः 1000-4500 मि.मी. मुख्य कॉफी किस्मः अरेबिका,रोबस्टा कॉफी अधीन कुल क्षेत्र अरेबिका 37,000 हे.,रोबस्टा-23,000 हे. औसत उत्पादनः अरेबिका 29,000 मे.ट. रोबस्टा 30,000 मे.ट. मुख्य किस्म: अरेबिका एस.795, एस.एल.एन.5बी एस.एल.एन.9 कावेरी, रोबस्टा-पेरिडेनिया ,एस.274, सी x आर मुख्य अन्तःफसलः गोल मिर्च, इलायची,सुपारी नारंगी, वेनीला

चिकमगलूर(कर्नाटक):चिकमगलूर के जंगल तथा अभ्यारण्य भारत का राष्ट्रीय पक्षी खूबसूरत मोर से भरे पड़े है। मोरों अपने रंगीन पंखों को दिखाना पसन्द करते हैं विशेषकर उनके लम्बे प्रणय नृत्य के दौरान।		
कूर्ग (कर्नाटक) 		उन्नतांशः750-1100 मी. एम.एस.एल वृष्टिः 1000-2500 मि.मी. मुख्य कॉफी किस्मःअरेबिका,रोबस्टा कॉफी अधीन कुल क्षेत्रः अरेबिका-26,000 हे, रोबस्टा-56,000 हे. औसत उत्पादनः अरेबिका 24,000 मे.ट. रोबस्टा 69,000 मे.ट. मुख्य किस्म : अरेबिका- एस.795, एस.एल.एन.6, एस.एल.एन.9 कावेरीः रोबस्टा-एस 274 सी x आर मुख्य अन्तःफसलःगोल मिर्च, इलायची,नारंगी, सुपारी केला
कूर्ग (कर्नाटक):घने कॉफी बागान मधु मक्खियों से भरे हैं जो स्वादिष्ट कूर्ग मधु उत्पन्न करते हैं जिसे द्रुतगति से चलने वाले आदिवासी संग्रहित करते हैं।		
मंजूराबाद(कर्नाटक) :छोटे झरनों और कॉफी के पौधे से युक्त हल्के ढ़ालू जमीन जंगली मुर्गो का प्राकृतिक वासस्थल है। लाल कलगी और बहु रंगीन पंखों के साथ इस पीले सिर वाले पक्षी को कॉफी बागानों के पास प्रायः जोडों में देखा जाता है। 		उन्नतांशः900-1100 मी. एम.एस.एल वृष्टिः 1000-2500 मि.मी. मुख्य कॉफी किस्मः अरेबिका,रोबस्टा कॉफी अधीन कुल क्षेत्रः अरेबिका 31,700 हे रोबस्टा-9,400 हे. औसत उत्पादनः अरेबिका 21,000 मे.ट. रोबस्टा 9,500 मे.ट. मुख्य किस्म : अरेबिका- एस.795, एस.एल.एन.6, एस.एल.एन.9 कावेरी, रोबस्टा-एस 274, सी x आर मुख्य अन्तः फसलः गोल मिर्च, इलायची,नारंगी, सुपारी केला

नीलगिरीस(तमिलनाडु):इस प्रदेश के अभयारण्य चितकबरे चीतों का आवास है। इसके विपरीत यहाँ के बागान विदेशी केन्ट्स से सम्मिलित अत्युत्तम पनपे अरेबिका से भरे हैं। 	उन्नतांशः900-1400 मी. एम.एस.एल वृष्टिः 1600-2600 मि.मी. मुख्य कॉफी किस्मःअरेबिका,रोबस्टा कॉफी अधीन कुल क्षेत्रः अरेबिका -3,600 हे, रोबस्टा- 4,000 हे. औसत उत्पादनः अरेबिका-1400 मे.ट. रोबस्टा-2800 मे.ट. मुख्य किस्म : अरेबिका-एस.795, केन्टस कावेरी रोबस्टा पेरिडेनिया,एस 274,सी$_x$ आर मुख्य अन्तःफसलःगोल मिर्च, नारंगी, केला, अदरक, सब्जियाँ
पलनीस (तमिलनाडु): इस प्रदेश की अनोखी विशिष्टता यह है कि यहाँ बारह सालों में एक बार नीले रंग के घंटीनुमा कुरंजी फूल नाटकीयता से प्रकट होते है। अत्यधिक पनपे अरेबिका, साल-दर-साल प्रचुर मात्रा में दिखाई देते है। 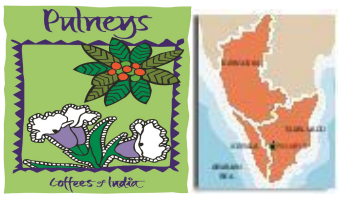	उन्नतांशः600-2000 मी. एम.एस.एल वृष्टिः 1000-1600 मि.मी. मुख्य कॉफी किस्मःअरेबिका कॉफी अधीन कुल क्षेत्रः 14,000 हे औसत उत्पादनः 7,500 मे.ट. मुख्य किस्म : एस.795, एस.एल.एन 5 बी, एस.एल.एन 9, एस.एल.एन 10, कावेरी मुख्य अन्तःफसलः नारंगी, केला, गोल मिर्च, इलायची, सब्जियाँ
शेवरायस(तमिलनाडु):शक्तिशाली शरीरवाला उत्कृष्ट गौर या भारतीय भैसे की तरह ही यहाँ भारी आकार के अरेबिका उगाई जाती हैं। यह भारी जानवर जो विशाल मूँड तथा बलिष्ठ पाँववाला है, इस सुंदर प्रदेश के निचले पहाड़ी भूभाग में घास चरता है । 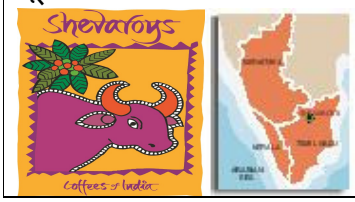	उन्नतांशः 900-1500 मी. एम.एस.एल वृष्टिः 800-1500 मि.मी. मुख्य कॉफी किस्मःअरेबिका कॉफी अधीन कुल क्षेत्रः 5,000 हे औसत उत्पादनः 3,000मे.ट. मुख्य किस्म : एस.795,कावेरी, एस.एल.एन.9 मुख्य अन्तःफसलःनारंगी, केला, गोल मिर्च

ट्रावन्कूर (केरल):भारत के राष्ट्रीय फूल कमल, शुद्धता और सुंदरता का प्रतीकहै। ये जलप्लावित पत्ते तथा लंबी तनेवाले चटक सुगन्धित फूल छिछले पानी में उपजते हैं और यह प्रदेश अरेबिका और रोबस्टा के लिए प्रसिद्ध है।	 	उन्नतांशः400-1600 मी. एम.एस.एल वृष्टिः 2000-4000 मि.मी. मुख्य कॉफी किस्मःरोबस्टा कॉफी अधीन कुल क्षेत्रः 13,,000 हे औसत उत्पादनः 9,000मे.ट. मुख्य किस्म : एस.274, सी x आर मुख्य अन्तःफसलः गोल मिर्च, केला, अदरक, सब्जियाँ, औषधीय पौधे
वायनाड(केरल):वायनाड, भारतीय बाघ का आवास है,भारत का राष्ट्रीय प्राणी जो शूरता और साहस का प्रतीक है। 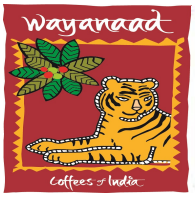 		उन्नतांशः600-900 मी. एम.एस.एल वृष्टिः 1100-1200 मि.मी. मुख्य कॉफी किस्मःरोबस्टा कॉफी अधीन कुल क्षेत्रः 67,000 हे औसत उत्पादनः 54,000मे.ट. मुख्य किस्म :पेरिडेनिया, एस.274, सी x आर मुख्य अन्तःफसलःगोल मिर्च,केला,अदरक, सब्जियाँ